International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

हिन्दी सिनेमा में महिला सशक्तिकरण

डॉ.शशि रानी
एसोसिएट प्रोफेसर
डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

हिंदी सिनेमा अपनी प्रारंभ से लेकर आज तक भारतीय समाज में नारी के हर रूप और रंग को प्रस्तुतकर्ता रहा है। बदलते समय और समाज की तस्वीर यहां स्पष्टत: देखी जा सकती है। सामाजिक विसंगतियों पर चोट करती दादा साहब फाल्के के समय की फिल्में जिस विमर्श को जन्म देती हैं स्त्री अधिकारों और संघर्षों को बेबाकी से प्रस्तुत करती आज की फिल्में उसी विमर्श को एक नया आयाम देती हैं। इस प्रासंगिक मुद्दे को लाने के लिए कई फिल्म निर्माताओं ने समानता और प्रमुख रूप से मानवाधिकारों की लड़ाई को उठाया है ताकि महिलाओं के शामिल होने की वास्तविक कहानी को उजागर करके जनता को जागरूक किया जा सके। प्रस्तुत आलेख में प्रमुख भारतीय फिल्मों में महिलाओं के चित्रण का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ताकि मुद्दों से जुड़ी वास्तविकता के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने और नए दृष्टिकोण को आकार देने में उनकी भूमिका का पता लगाया जा सके। अध्ययन में पारंपरिक चित्रण से परे जाने की हिम्मत करने वाली फायर, पिंक, गुलाब गैंग, कहानी, जैसी फिल्मों की छवियों को देखने का प्रयास है जिन्होंने महिलाओं को एक सशक्त पहचान दी है।

बीज शब्द: पितृसत्तात्मक समाज,मानवाधिकार, सशक्तिकरण, एजेंसी

परिचय

भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है जहाँ महिलाओं को व्यावहारिक जीवन में पुरुषों से हीन माना जाता है । यद्यपि प्राचीन भारतीय शास्त्रों में स्त्रियों को पुरुषों से ऊँचा स्थान दिया गया है, परन्तु वास्तव में स्थिति इसके ठीक विपरीत है (हजारिका., और अन्य,2011)। आज भी महिलाओं को कई घरेलू और बाहरी मामलों में भाग लेने से मना किया जाता है, विशेष रूप से निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। 'वे शादी से पहले अपने माता-पिता और शादी के बाद अपने पति के प्रभाव में हैं। देश के ज्यादातर हिस्सों में बेटों को बेटियों से ज्यादा तरजीह दी जाती है (नायक., 2012)। इससे परिवारों में लड़कों को उनके जन्म से ही तरजीह दी जाती है। जनसांख्यिकीय रुझान यह भी दिखाते हैं कि गहन लिंग भेदभाव है जो कन्या भ्रूण हत्या/भ्रूण हत्या और प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण से शुरू होता है। देश के कई राज्यों में लिंग निर्धारण एक आम बात है जैसे- महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा (उमा,एन 2012)। केरल और गोवा राज्यों को छोड़कर, देश में 927 महिलाओं और 1,000 पुरुषों का प्रतिकूल लिंगानुपात देखा गया है। महिला शिशु मृत्यु दर प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 49.14 मृत्यु दर, पुरुष शिशु मृत्यु दर 46.12 मृत्यु प्रति 1,000 जीवन से अधिक है (बोस., 2008)। लड़कियां कुछ बुनियादी जरूरतों जैसे पोषण, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, शिक्षा और रोजगार के अवसरों से भी वंचित हैं। लड़कियों को पुरुष प्रधान और पितृसत्तात्मक समाज में समायोजित करने के लिए लाया जाता है। उन्हें घर के सारे काम करना सिखाया जाता है, ताकि शादी के बाद वे अच्छी पत्नियां बन सकें (रेड.और अन्य 2016)। भारतीय संविधान ने वर्ष 1950 में लैंगिक असमानता को मिटाने के लिए पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए।

साहित्य समीक्षा

राम के अनुसार, (2002), समाज में महिलाओं को उत्पीड़न से मुक्त करने के लिए कई कानून लागू किए गए। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद मातृत्व लाभ, विरासत, तलाक, समान वेतन और घरेलू हिंसा के खिलाफ कार्रवाई से संबंधित विभिन्न कानून अस्तित्व में आए। इन सभी कानूनों के बावजूद, सांस्कृतिक रूप से महिलाओं को अभी भी कमजोर व्यक्तियों के रूप में देखा जाता है । कई महिलाएं अभी भी घरेलू हिंसा और काम पर उत्पीड़न की शिकार हैं; आज भी एक कन्या जन्म के समय से ही वंचित रहती है। कार्यबल में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम है। ज्यादातर मामलों में महिलाएं पुरुषों की तुलना में कम पैसा कमाती हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

देशपांडे के अनुसार, (2007), सिनेमा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व भारत में नारीवादी फिल्म सिद्धांतकारों के बीच बहस का एक प्रमुख मुद्दा रहा है। जो भारतीय फिल्मों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के पहलुओं पर प्रकाश डालता है। भारत में महिलाओं और सिनेमा के बीच परस्पर क्रिया को समझने के लिए महिलाओं का प्रतिनिधित्व और पर्दे पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व आवश्यक है। पितृसत्तात्मक समाज में शक्ति और लिंग संबंधों के भीतर महिलाओं की स्थिति और प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करने के लिए, हमें महिलाओं के जीवन में एजेंसी की भूमिका पर विचार करने की आवश्यकता है। "एजेंसी" व्यक्तिगत मनुष्यों की स्वतंत्र रूप से कार्य करने और अपने स्वयं के स्वतंत्र विकल्प बनाने की क्षमता को संदर्भित करता है।

अध्ययन का विश्लेषण

फिल्म उद्योग में महिलाओं की क्या भूमिका है?

कई परिदृश्यों में महिलाओं की बदलती छवि, स्थायी, आत्म-त्याग करने वाली महिलाओं के पारंपरिक चित्रणों से आत्मनिर्भर, मुखर और महत्वाकांक्षी महिलाओं की ओर, समाज को उनकी मांगों के प्रति संवेदनशील बनाना, फिल्मों में दिखाया गया है (नंदकुमार,और अन्य 2011)। वे समाज की महिलाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं और एक गृहिणी से एक आत्मनिर्भर महिला बनने की उनकी यात्रा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शिक्षा-

महिला सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है जिस पर भारतीय फिल्म निर्माताओं ने जोर दिया है। कई फिल्मों में, यह दर्शाया गया है कि शिक्षित महिलाएं अपनी जरूरतों और अधिकारों के बारे में अधिक जागरूक हैं और एक शिक्षित महिला पितृसत्तात्मक नियमों को चुनौती देने की कोशिश करेगी जो उसके विकास में बाधा डालती हैं (शर्मा., और अन्य 2016)। फिल्म दमन में, नायक दुर्गा को एक ऐसी महिला के रूप में चित्रित किया गया है जो शिक्षित नहीं है और अपने पति और उसके परिवार द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को सहन कर एक दयनीय जीवन जीती है।

निर्णय लेना और अधिकारिता-

एजेंसी के मुख्य संकेतकों में से एक निर्णय लेने की शक्ति है। पितृसत्ता में पुरुष सभी निर्णय लेते है जबकि महिलाएं केवल पुरुषों केनिर्णयों के अनुरूप होती हैं (मगल., और अन्य 2016)। इस अर्थ में, स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम होने की क्षमता उनके लिए सशक्तिकरण का संकेत देगी। इस दृष्टि से दमन में, नायिका अपने पति के हाथों दुर्व्यवहार के कारण अपने दुख को समाप्त करने के लिए अपना घर छोड़ने का निर्णय लेती है।

विद्रोह-

चयनित फिल्मों के अधिकांश महिला पात्रों के व्यक्तित्व में विद्रोह का स्पर्श है। ये अपने कार्यों के माध्यम से अपने व्यक्तित्व पर जोर देने का प्रयास करती हैं, कभी-कभी इन कार्यों के परिणामों के बारे में भी नहीं सोचती हैं (रोहमन., और अन्य 2016)। दमन में नायक दुर्गा अपने पति की हिंसा के खिलाफ विद्रोह करती है और अंत में उसे मार देती है, जिससे एक विनम्र महिला की अपेक्षित छवि टूट जाती है।

महिला सशक्तिकरण फिल्में कौन सी हैं जो महिलाओं को समाज में अपने लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करती हैं?

फिल्मों ने हमेशा महिलाओं को रूढ़िबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया है। फिल्में न केवल महिलाओं को कई निश्चित भूमिकाओं में दर्शाती हैं बल्कि वे आम जनता में महिलाओं के प्रति नकारात्मक धारणा भी बनाती हैं। हिंदी सिनेमा में, महिलाओं को अक्सर कमजोर, हाशिए पर और मनोरंजन की वस्तु के रूप में चित्रित किया जाता है। महिलाओं की वस्तुनिष्ठता ने उन्हें समाज में कमजोर बना दिया है। फिल्मों में महिलाओं के बारे में नकारात्मक धारणाओं को दिखाया गया है जो समाज को संक्रमित करती हैं।

विधवाओं को मूल्यहीन और भावहीन रूप में चित्रित किया जाता था। बॉलीवुड अब फिल्मों और विषयों के साथ प्रयोग कर रहा है। निर्माता और निर्देशक अपरंपरागत विषयों और मुद्दों पर फिल्में बना रहे हैं। इसलिए महिला चरित्र मजबूत, शिक्षित, आत्मनिर्भर महिलाओं के चरित्रों में विकसित हो रहे हैं और पुरुष प्रधान व्यवसायों में भूमिका निभा रहे हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

रिवॉल्वर रानी में कंगना रनौत का किरदार एक गैंगस्टर का है। उसका चरित्र लड़ता है और दुश्मनों को मार गिराता है। उसके पास बड़ी संख्या में पुरुष सहयोगी और अधीनस्थ हैं।

कहानी में विद्या बागची (विद्या बालन) एक जासूस की भूमिका निभाती है। जासूस या एजेंट के पेशे में ज्यादातर पुरुषों का ही वर्चस्व होता है। यह एक अच्छा संकेत है कि बॉलीवुड इस तरह की चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं के लिए महिलाओं को कास्ट कर रहा है। बॉबी जासूस नामक एक अन्य फिल्म में विद्या बालन एक जासूस की भूमिका में हैं। मर्दानी में रानी मुखर्जी एक सख्त पुलिस अधिकारी की भूमिका में हैं जो ड्रग माफिया और मानव तस्करी गिरोह से लोहा लेती है। इससे पहले, महिला पुलिस को मुख्य रूप से सजावटी तत्वों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

भारत जैसे पितृसत्तात्मक समाज में खेलों में लड़कियों का प्रवेश वर्जित है लेकिन अब समाज में और फिल्मों में भी स्थिति बदल रही है। चक दे इंडिया, दंगल और मैरीकॉम जैसी फिल्में पुरानी मानसिकता को तोड़ती हैं। 'म्हारी बेटियां के छोरों से कम हैं'बबीता के पिता का यह कथन समाज में बेटी के अस्तित्व को सशक्त बनाता है।

निष्कर्ष

आर्थिक उदारीकरण के बाद, भारतीय बाजारों को निवेश के लिए खोल दिया गया। इसने समाज में तकनीकी उन्नति और सामाजिक चेतना को बढ़ाया। इस तरह निवेश, तकनीकी उन्नति और सामाजिक चेतना - ने एक ऐसा माहौल तैयार किया जिसमें फिल्मों ने महिलाओं से जुड़े मुद्दों को उठाना शुरू कर दिया। इंडस्ट्री सिर्फ मसाला मूवी फॉर्मूले पर नहीं टिकना चाहती। वे विभिन्न विषयों के साथ प्रयोग कर रहे हैं। बॉलीवुड में महिला प्रधान फिल्मों की राह अब खुल गई है।

महिला प्रधान फिल्मों के भविष्य के प्रति निर्देशक और फिल्म निर्माता आश्वस्त हैं कि ये महिलाओं पर केंद्रित फिल्म बना सकते हैं और यह आर्थिक रूप से व्यवहार्य होगी। महिलाओं पर इतनी फिल्में रिलीज होने के पीछे यही वजह है। यह बॉलीवुड इंडस्ट्री और दर्शकों दोनों की परिपक्वता को दर्शाता है। दोनों ने महिलाओं पर फिल्म बनाने और देखने में रुचि पैदा की है। तर्पण, बवंडर, गॉड मदर, जुबेदा, चांदनी बार, फैशन, नो वन किल्ड जेसिका जैसी फिल्मों ने निर्देश को नहीं महिलाओं की छवि को बहुत ही संवेदनशीलता के साथ दर्शाया है। गुलाब गैंग, क्वीन, रिवॉलवर रानी, मरदानी, बॉबी जासूस, मैरी कॉम, नीरजा, अकीरा, पीकू और कहानी ऐसी फिल्में हैं जो दर्शाती हैं कि स्त्री शक्ति का रूप है जो चाहे तो कुछ भी कर सकती है। पहले स्त्री को पुरुष पात्रों के अधीन, शोषित और अधीनता के रूप में चित्रित किया गया था। लेकिन हाल के दिनों में उनके किरदार मजबूत, आत्मविश्वास से भरे हुए हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।

ये भूमिकाएं बदलते भारत की नई और आधुनिक महिलाओं को परिभाषित कर रही हैं। पीकू में, नायक (दीपिका पादुकोण) अपने बूढ़े पिता की देखभाल करती है। वह एक कॉर्पोरेट ऑफिस में काम करती है और वह शादी नहीं करना चाहती क्योंकि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहती।

पिछले दो दशकों में फिल्म निर्माण और फिल्म देखने में काफी बदलाव आया है। अब बॉलीवुड मसाला फिल्में बनाता है और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी फिल्में बनाता है। ये फिल्में मनोरंजन और बिजनेस के अलावा दर्शकों के बीच सामाजिक जागरूकता भी पैदा कर रही हैं। बॉलीवुड फिल्मों में महिलाओं के चित्रण के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिपक्व हो गया है। महिलाओं की भूमिकाएं और चरित्र अब फिल्मों में केंद्रीय हैं। महिलाओं के विभिन्न मुद्दों ऑनर किलिंग, कन्या भ्रूण हत्या, एसिड अटैक यानी महिलाओं की अस्मिता को चुनौती देने वाले और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाले विषयों पर निरंतर फिल्मी बन रही है।इससे पहले ठेठ बॉलीवुड मसाला फिल्मों में महिलाओं को कमजोर और हाशिए पर दिखाया जाता था। लेकिन बदलते परिदृश्य में, फिल्मों में महिलाओं का चित्रण अलग हो गया है। अब उन्हें कारणों और अधिकारों के लिए लड़ने वाली महिलाओं के रूप में चित्रित किया जाता है। इस तरह सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि सशक्त कथा और अभिनय के कारण समाज की सोच को प्रभावित करने और महिलाओं को सशक्त बनाने में महती भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

संदर्भ

हजारिका, डी. (2011)। भारत में महिला सशक्तिकरण: एक संक्षिप्त चर्चा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 1 (3), 199-202।

नायक, पी., और महंत, बी. (2012)। भारत में महिला सशक्तिकरण। राजनीतिक अर्थव्यवस्था का बुलेटिन, 5(2), 155-183।

उमा, एन। (2012)। स्वयं सहायता समूह: भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(8), 8-16।

बोस, बी. (2008)। आधुनिकता, वैश्विकता, कामुकता और शहर: भारतीय सिनेमा का एक वाचन। द ग्लोबल साउथ, 35-58।

रेड, एमटी (2016)। भारतीय सिनेमा में महिलाएं और उनका चित्रण। मानविकी और सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेएचसीएस) आईएसएसएन 2356-5926, 2(4), 1318-1334।

राम, ए (2002)। फेमिनिन का निर्माण: लोकप्रिय भारतीय सिनेमा में डायस्पोरिक रीडिंग ऑफ जेंडर। संचार में महिला अध्ययन, 25(1), 25-52.

देशपांडे, ए. (2007)। भारतीय सिनेमा और बुर्जुआ राष्ट्र राज्य। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 95-103।

नंदकुमार, एस। (2011)। वाणिज्यिक भारतीय सिनेमा में महिलाओं का रूढ़िवादी चित्रण (डॉक्टरेट शोध प्रबंध)।

शर्मा, एस., और नर्बन, जे.एस. (2016)। भारतीय सिनेमा और महिलाएं। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड इनोवेटिव आइडियाज इन एजुकेशन, 2(1), 491-494।

मगल, यू। (2016)। भारतीय सिनेमा आजादी के पचास साल बाद: किण्वन का एक सिनेमा। एशियाई सिनेमा, 10(1), 193-197।

रोहमन, एफ. वाई. (2016, अगस्त)। भारतीय सिनेमा में खेलों का बॉलीवुडीकरण। मीडिया और जनसंचार पर विश्व सम्मेलन की कार्यवाही में (वॉल्यूम 5, नंबर 1, पीपी 58-75)।

सांवलिया बिहारी वर्मा, महिला जागृति और सशक्तिकरण, 2005

सुनील महावर, भारत में महिला सशक्तिकरण: विविध आयाम और चुनौतियां, 2012

अनुराग द्विवेदी, महिला सशक्तिकरण मिथक और वास्तविकता, 2015